भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद

(हिन्दी परिशिष्ट)

खंड १७] १९६५ [अंक २

अनुक्रमणिका

पृ. सं.

१. अपूर्ण इष्टका समनुविधानों की अनेक श्रेणियों का निर्माण तथा विश्लेषण iii

एस० एस० स्वामीनाथन तथा एम० एन० दास

२. एक अनंतस्पर्शीय समाश्रयण वक्र के आसंजन में लम्ब-कोणीय बहुपद का प्रयोग iv

ए० एस० चोपड़ा

३. गन्नें की फसलों में तना बेधक कीट के प्रभाव का आगणन iv

आर० एस० श्रीवास्तवा

४. कम पुनरावृत्ति सहित संकरणित असममित कारकीय अभिकल्पों के निर्माण करने की कुछ विधियों के उपलक्ष्य में v

पी० आर० श्रीनाथ

५. अभिभाव तथा जीन रूपी एवम् पर्यावरण परस्पर क्रिया की उपस्थिति में सतत विचरण घटक ... vi

टी० सी० आर० सरमा तथा पी० नारायण

पृ. सं.

६. कीट तथा रोग सर्वेक्षण के आधीन एकत्रित सामग्री हेतु संयुक्त विश्लेषण विधि के संभाव्य प्रयोग के उपलक्ष में vii

टी० पी० अब्राहम तथा आर० के० खोसला

७. भाज्य शक्ति की कोटि के पारस्परिक लम्बकोणीय लैटिन वर्गों के निर्माण के सम्बन्ध में viii

जे० एस० मूर्ति

८. भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद के १९६२–६३ वर्ष की अवधि में संसद द्वारा किये गये कार्यों का पुनर्विलोकन viii

अपूर्ण इष्टका समनुविधानों की अनेक श्रेणियों का निर्माण तथा विश्लेषण

एस० एस० स्वामीनाथन
रबड़ मंडल, कोटायाम, केरला
तथा
एम० एन० दास
भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद, नई दिल्ली

सारांश

इस लेख में दो अपूर्ण इष्ट का समनुविधानों में साहचर्य स्थापित करके अपूर्ण इष्टका समनुविधानों का निर्माण करने की ३ विधियाँ प्रस्तुत की गयी हैं। एक विधि यह है कि पहले एक अपूर्ण इष्टका समनुविधान (जिसें प्राथमिक समनुविधान करने हैं) लेकर प्राथमिक समनुविधान की प्रत्येक इष्टका से इष्टका वस्तु सहित एक सन्तुलित अपूर्ण इष्टका समनुविधान (जिसे द्वितीय समनुविधान कहते हैं) बनाना। इस प्रकार प्राप्त किये गये द्वितीय समनुविधान जब एक साथ रखे जाते है तो उन से एक और अपूर्ण इष्टका समनुविधान प्राप्त होता है। सं०अ०इ०, आ०स०अ०ई० इत्यादि समनुविधानों की प्राथमिक समनुविधान के रूप में प्रयुक्ति से इस विधि द्वारा समनुविधानों की अनेक श्रेणियां प्राप्त की गयी हैं। इस विधि द्वारा प्राप्त होने वाले सभी समनुविधानों का विश्लेषण द साधारण विधि के अतिरिक्त दो स्तरों में किया जा सकता है। विश्लेषण की पहली अवस्था प्रत्येक द्वितीय समनुविधान का अलग-अलग करने में हैं। फिर प्राथमिक समनुविधानों की इष्टकाओं में अवलोकन इनके आगणक मान लिये जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक समनुविधान संगत इष्टका वस्तु प्रदान करता है।

निर्माण करने की तीसरी विधि है इन दो समनुविधानों को एक अन्य ढंग से जोड़ना। इस ढंग में पहले किसी अपूर्ण इष्टका समनुविधान को ले कर फिर अपूर्ण इष्टका समनुविधान में प्रत्येक कारक के साथ ध संख्याओं का सहयोग स्थापित किया जाता है। इसके पश्चात प्रत्येक इष्टका वस्तु को

समूहों में इस प्रकार बाँटा जाता है कि प्रत्येक में ऐसे सभी कारक हो जिन का सहयोग किसी विशिष्ट संख्या से हो। इन समूहों को कारक मानकर फिर एक दूसरा अपूर्ण इष्टका समनुविधान, आ०स०अ०इ० समनुविधानों की एक नई श्रेणी प्राप्त करने के लिये बनाया जाता है।

एक अनंतस्पर्शीय समाश्रयण वक्र के आसंजन में लम्बकोणीय बहुपद का प्रयोग

ए० एस० चोपड़ा

कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्था, नई दिल्ली

सारांश

अरैखिक समाश्रयण वक्र $रा = क_0 + क_1 य + \cdots + क_स + ऋदि_य$ मे दि के आगणन की एक विधि लम्बकोणीय द्विपद गुणांक की सहायता से सुझावित की गयी है। दो विशेष स्थितियों जब कि सभी क सिवाये $क_0$ तथा $क_0$ और $क_1$ के शून्य हों की तुलना उन की उपलब्ध रीतियों से की गयी है।

गन्नें की फसलों में तना बेधक कीट के प्रभाव का आगणन

आर० एस० श्रीवास्तवा

भारतीय ईख अनुसन्धान संस्था, लखनऊ

ईख की फ़सलों में तना बेधक कीट के प्रभाव का आगणन करने के लिये तने अथवा तनों के झुंड नियंत्रण योग्य प्राथमिक इकाइयां नहीं हैं। लम्बाई अथवा क्षेत्रफल की ऐसी इकाइयां भी नहीं बनाई जा सकतीं जिस में कि तनों की संख्या बराबर हो। इसलिये प्राथमिक इकाइयों में पीड़ित तथा सारे तनों के बंटनों का पृथक पृथक अनुसन्धान किया गया है। पता लगा है कि पीड़ित तथा कुल तनों के बंटनों में प्रसरण माध्य से बहुत अधिक है तथा यह

बंटन प्रसामान्य, द्विपद अथवा प्वासों बंटनों से विभिन्न थे। दोनों के ही बंटन समरूप तथा ऋणात्मक द्विपद बंटन के अनुरूप थे। क्योंकि यह प्रभाव दो यादृच्छिक चरों का अनुपात है इन मूल्यों की धारणा अथवा इन के सामान्य प्वासों या, द्विपद बंटनों से सम्बंधित होने की मान्यता की जाँच की गयी। इस अनुपात के आगणन के लिये जया $अ^{-1}$ रूपांतरण पर आधारित तथा ऋणात्मक द्विपद बंटन से लिये गये प्रतिदर्शों के लिये मान्य एक संगत प्रतिदर्शज का सुझाव दिया गया है तथा इसकी दक्षता की तुलना शेष प्रतिदर्शजों की दक्षता से की गयी है।

इस प्रतिदर्शज की तुलनात्मक दक्षता, समानुपात, द्विपद तथा प्वासों बंटनों पर आधारित अन्य तीन प्रतिदर्शजों के सम्बंध में ज्ञात की गयी है तथा सुझावित प्रतिदर्शज की आपेक्षिक दक्षता उच्चतम सिद्ध हुई।

कम पुनरावृत्ति सहित संकरणित असममित कारकीय अभिकल्पों के निर्माण करने की कुछ विधियों के उपलक्ष्य में

पी० आर० श्रीनाथ

कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्था, नई दिल्ली

सारांश

इस लेख में आंशिक सन्तुलित अपूर्ण इष्टका अभिकल्पों के द्वारा थ $\times$ $२^{घा}$ प्लाट इष्टकाओं में थ $\times$ $२^{ड}$ प्रकार के अभिकल्पों के निर्माण करने की विधियां (१) ख-पुनरावृत्तियों सहित तथा (२) ख-अर्द्ध पुनरावृत्तियों सहित वर्णित की गयी हैं। ख, आंशिक सन्तुलित अपूर्ण इष्टका अभिकल्प में, ईष्टकाओं की संख्या है। एक और विधि भी प्रस्तुत की गयी है जिस के द्वारा दो पुनरावृत्तियों वाले ऐसे अभिकल्प प्राप्त किये जा सकते हैं जब कि थ-एक समसंख्या है। इन सभी अभिकल्पों में विश्लेषण विधि के अंतिरिक्त विभिन्न प्रभावित परस्पर क्रियायें तथा उन में सूचना की क्षति भी दी गयी है।

अभिभाव तथा जीन रूपी एवम् पर्यावरण परस्पर क्रिया की उपस्थिति में सतत विचरण घटक

टी० सी० आर० सरमा तथा पी० नारायण

कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्था, नई दिल्ली

अभिभाव तथा जीन रूप एव पर्यावरण की परस्पर क्रियाओं की उपस्थिति में दृश्य रूपी घटकों की व्याख्या की गयी है। विचरण के पर्यावरण घटक पर परस्पर क्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

दो पर्यावरणों तथा दो जीन अन्तरों सहित १८ दृश्य रूपियों में भेद की व्याख्या १७ प्राचलों के रूप में की जा सकती है। इन में से ८ प्राचल, जीन भेद, युग्म विकल्पी परस्पर क्रिया तथा युग्म विकल्पी रहित द्विपोषदिक रूपी परस्पर क्रियाओं माध्य प्रभाव को मापते हैं। एक प्राचल पर्यावरण भेद के माध्य प्रभाव का मापक है। तथा शेष ८ प्राचल पर्यावरण तथा प्रथम ८ प्राचलों की परस्पर क्रिया के मापक हैं। पर्यावरण भेद को लम्ब कोणीय घटकों से विभाजित करके दो से अधिक पर्यावरणों को स्थान दिया जा सकता है।

दो शुद्ध प्रजनन प्रभेदों के संकरण से व्युत्पन्न चा$_{१}$, चा$_{२}$ से व्युत्पन्न धा$_{३}$ (द्विपैतृक) तथा ठ$_{३}$ (मातृक) परिवारों के वियोजन से तथा चा$_{२}$ से व्युत्पन्न वा$_{३}$ के लिये प्रसरण की खोज की गयी है।

कीट तथा रोग सर्वेक्षण के आधीन एकत्रित सामग्री हेतु संयुक्त विश्लेषण विधि के संभाव्य प्रयोग के उपलक्ष में

टी० पी० अब्राहम तथा आर० के० खोसला
कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्था

सारांश

फसलों के कीट तथा रोगों पर सर्वेक्षण कार्यन्वित करने में साधारणतया निम्न उद्देश्य होते हैं।

(क) प्रभाव की मात्रा का आगणन।

(ख) इस प्रभाव के विचरण तथा उपज में सहसम्बंध स्थापित करना।

(ग) कीट तथा रोगों के प्रभाव तथा अन्य कारकों जैसे स्थल की रूप रेखा, भूमि का प्रकार, बीज का प्रकार, उर्वरकों का उपयोग, बीजन विधि इत्यादि में साहचर्य का अध्ययन करना। प्रायः अनेक कीट तथा रोग एक साथ ही उसी खेत में हो जाते हैं। इसलिये इन कीटों तथा रोगों के आवधिक अवलोकन द्वारा अनेक चर उत्पन्न होते है। उन में से प्रायः १० से २० तक से अधिक का अध्ययन करना होता है।

इस लेख में चर संख्या को कम करने तथा एक खेत में कीट तथा रोगों के प्रभाव के स्तर का एक ही सूचक बनाने का प्रयत्न किया गया है। इस उद्देश्य के लिये संयुक्त विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। यह ज्ञात हुआ है कि विभिन्न वर्षों में यह सूचक कुल विचरण के लगभग ३३ से ३९ प्रतिशत के लिये उत्तरदायी सिद्ध हुआ। (१) श्रेणी करण विधि, (२) इलस्टन द्वारा सुझावित विधि, (३) मानित मुल्यों पर आधारित वैकल्पिक सूचक भी तैय्यार किये गये तथा संयुक्त विश्लेषण विधि पर आधारित सूचक से इनकी तुलना की गयी। साधारण श्रेणी करणविधि पर आधारित सूचक तथा संयुक्त विशेषण की अधिक जटिल विधियों पर आधारित सूचक में निकट सहमती पाई गयी। उपज तथा परिकलित सूचकों में सहसम्बंध का हिसाब लगाया गया। इन सहसम्बंधों का मूल्य कम था यानि के ०.०१ से ०.३५ के क्षेत्र में दूसरे सस्य विज्ञान कारकों तथा कीट और रोग के प्रभाव में साहचर्य का अध्ययन करने के लिये इस सूचक के उपयोग का एक उदाहरण दिया गया है।

भाज्य शक्ति की कोटि के पारस्परिक लम्बकोणीय लैटिन वर्गों के निर्माण के सम्बन्ध में

जे० एस० मूर्ति

कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्था, नई दिल्ली

सारांश

इकाई सूचक की दो नई श्रेणियों के युगमतः सन्तुलित समनुविधान प्राप्त किये गये हैं। उन में एक के द्वारा किसी दो अभाज्य संख्याओं के गुणन-फल के बराबर कोटि के अधिकतम सम्भव पा०ल०लै०व० के सम्बंध में मैकनिश तथा मान के परिणाम की विशिष्ट स्थिति की व्युत्पत्ति की जा सकती है। भाज्य शक्ति की कोटियों के अधिकतम सम्भव पा०ल०लै०व० के निम्न परिबंध में कुछ सुधार किये गये हैं।

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद के १९६२–६३ वर्ष की अवधि में संसद द्वारा किये गये कार्यों का पुनर्विलोकन।

भारतीय कृषि सांख्यिकी संसदीय परिषद की ओर से ३० जून १९६४ को समाप्त होने वाले वर्ष में संसद द्वारा किये गये कार्यों का विवरण आप के सन्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव होता है। गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष सदस्यों की संख्या २०१ के स्थान पर २१२ थी। ६ सदस्य सम्मानार्थ हैं, ७ संरक्षक सदस्य हैं, ५० स्थायी सदस्य तथा १४९ साधारण सदस्य हैं। सदस्य भारत के सभी भागों से तथा विदेशों से भी हैं। कृषि सांख्यिकों तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं, जो कि मुख्यतः कृषि सम्बंधित सांख्यिकी के विकास में रुचि रखते हैं, के अतिरिक्त सदस्यता कृषि विभागों, संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों तक विस्तृत है। सदस्यता के अतिरिक्त संसद के पास चन्दा देनेवालों की एक अतिरिक्त सूचि भी है जिसमें देशी तथा विदेशी महत्वपूर्ण अनुसन्धान संस्थायें सम्मिलित हैं। इस वर्ष भारतीय तथा विदेशी मिलाकर चन्दा देनेवालों की संख्या १५० थी।

स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद के पश्चात श्री० एस० के० पाटिल, जो कि उस समय केन्द्रीय सरकार के खाद्य तथा कृषि मंत्री थे, कों संसद का प्रधान चुना गया। संसद के कार्यों के पथप्रदर्शन में जो उत्साह उन से मिला इसके लिये उनके प्रति संसद की ओर से अत्यधिक आभार प्रकट करने में बड़ा हर्ष हाता है।

संसद के प्रकाशन कार्यक्रम के सम्बंध में यह कहना है कि इस वर्ष में संसद की पत्रिका के १५ वें खण्ड के अंक १ तथा २ का प्रकाशन हो गया है। अक्तूबर १९६४ में १६ वें खण्ड का पहला अंक भी प्रकाशित हो गया था। १६ वें खण्ड का दूसरा अंक मुद्रणालय में है तथा उसके शीघ्र ही छप जानें के संभावना है। इस प्रकार पत्रिका का प्रकाशन अब तक पूर्णतया समाप्त हो गया है तथा संसद आशा करता है कि भविष्य में भी मुद्रणालय पत्रिका को समय पर छापने में संसद की सहायता करेगा। संसद की पत्रिका में एक विषय सदस्यों से सम्बंधित "समाचार तथा टिप्पणियां" छापा जा रहा है। इस शीर्षक के अन्तर्गत जिस प्रकार की सामग्री प्रकाशित की जाती है यह संसद की पत्रिका के हाल के कुछ खण्डों में तथा उन डाक कार्डों में दर्शाया गया हैं जो कि सदस्यों को भेजे जाते हैं। सभी सदस्यों से प्रार्थना है कि इस में सहयोग दें तथा इस विषय पर क्रमिक रूप से सामग्री भेजा करें।

यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि संसद के पास समस्त संसार की इसी प्रकार की विख्यात संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं से पत्रिका विनिमय के लिये अनेक प्रार्थनायें आती हैं। इस समय संसद की पत्रिका के बदले में १४ पत्रिकायें प्राप्त की जाती हैं। कुछ प्रमुख पत्रिकाओं के नाम हैं (१) राजशाही सांख्यिकी संसद की पत्रिका—ख श्रेणी, (२) बायोमेट्रिकस, (३) गणीतीय सांख्यिकी बुलेटिन—जपान, (४) सांख्यिकी गणीतीय संस्था की इत्तिवृत्तियां—जापान, (५) विज्ञान अकादमी की बुलेटिन—सोवियत संघ। इस वर्ष में पत्रिका विनिमय के लिये संसद के पास पांच प्रार्थनायें आयी। बदले में आने वाली पत्रिकाय़ें, कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्था लायब्रेरी एवेन्यू, नई दिल्ली–१२, के पुस्तकालय में रखी जाती हैं तथा संसद के सदस्य उन का अध्ययन कर सकते हैं। उनकी सूचि समय-समय पर संसद की पत्रिका में प्रकाशित की जाती है।

हिन्दी परिशिष्ट जो कि पत्रिका का एक विशेष लक्षण हैं प्रकाशित किया जाता है। यह संसद की ओर से विषय पर हुए विज्ञानिक विवादों का राष्ट्र-भाषा हिन्दी में यथार्थ वर्णन करने के प्रयत्न को प्रदर्शित करता है।

पत्रिका की छपाई के लिये पर्याप्त धन की समस्या संसद के कार्यकारिणी परिषद का ध्यान सदैव आकर्षित करती है क्योंकि इस प्रकार की प्रावैधिक पत्रिका के प्रकाशन का व्यय अधिक होता है। इस कारण से इसके प्रकाशन का कार्य उस अनुदान द्वारा चलाया जाता है जो कि केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों तथा अन्य राष्ट्रीय संगठनों से प्राप्त होता है। इस वर्ष में अनुदान उड़ीसा राज्य, उत्तरप्रदेश राज्य, महाराष्ट्र राज्य, गुजरात राज्य तथा भारत की राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्था से प्राप्त हुआ। संसद इन संगठनों से प्राप्त वित्तीय सहायता को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकृत करना चाहती है।

सदस्यों को याद होगा कि सांख्यिकी अनुसन्धान की उन्नति के विचार से संसद ने अपनी पत्रिका में छापे गये श्रेष्ठ तथा पुयाप्त उच्च कोटि के लेखों के लिये परितोषिक अर्पित करने की एक योजना स्थापित की थी। पत्रिका में छपने वाले उत्तम लेखों के लिये पांच-पांच सौ रुपये के पांच पुरस्कार (१) प्रयोग अभिकल्पना तथा विश्लेषण, (२) प्रतिदर्श सर्वेक्षण, (३) सांख्यिकीय अनुवंशिकी, (४) सांख्यिकीय विधियों तथा (५) प्रयोगात्मक लेखों के क्षेत्रों में हैं। संसद द्वारा बाद में किये गये एक निश्चय के अनुसार यह पुरस्कार बारी से प्रत्येक वर्ष में एक की दर से दिये जायेंगे। आरंभ खण्ड १२ तथा १३ में प्रकाशित प्रयोग अभिकल्प तथा विश्लेषण पर लेखों से किया जायगा।

डा० पी० वी० सुखात्मे द्वारा रचित पुस्तक "सर्वेक्षणों के निदर्शन सिद्धांत" जिसका प्रकाशन संसद द्वारा किया जाता है की मांग बराबर चल रही है। पुस्तक की नयी छपाई का माल, जो कि आइवा राज्य विश्वविद्यालय मुद्रणालय, यू० एस्० ए०, में था, बिक जाने के पश्चात एक नया प्रेषण आइवा राज्य विश्वविद्यालय के मुद्रणालय से प्राप्त किया गया था। इस में से अधिक-तर माल बिक चुका है। यह पुनःनिरीक्षण आधीन है। निकट भविष्य में ही इस के संशोधित संस्करण के छप जानें की आशा की जाती है।

भारतीय कृषि अर्थशास्त्र संसद के साथ मिल कर संसद ने कृषि उत्पादन के आयोजन की समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिये ९ से १५ नवंबर

१९६४ तक मठेराँ में एक संगोष्ठी का आयोजन करके इस वर्ष संसद ने एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस विषय पर बहुत से विशेष व्यक्तियों ने विचार-विमर्श में भाग लिया। जिन प्रश्नों पर विचार-विमर्श किया वह थे (१) कृषि सम्बंधित योजना का उपागम तथा विधियां, (२) कृषि सम्बंधी योजना की नीति, (३) कार्यक्रमों तथा लक्ष्यों के निरूपण तथा बहिर्वेषण की विधियां, (४) योजना बनाने में आवश्यक संस्थायें, निवेश तथा प्रोत्साहन। यह इस प्रकार का पहला विचार विमर्श था तथा इस से योजना बनाने की समस्याओं तथा विधियों के निर्धारण में बहुत सहायता मिलेगी।

इस परिसंवाद में हुए विचार-विमर्शों का विवरण छापा जा रहा है तथा सदस्य इस विवरण की प्रतियों के लिये अपनी आवश्यकता भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद के अवैतनिक सचिव को सूचित कर दें।

संसद का १७ वा वार्षिक सम्मेलन जयपुर में ३ से ५ जनवरी १९६४ तक हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन राजस्थान के राज्यपाल डा० सम्पूर्णानन्द द्वारा किया गया। सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए राजस्थान के योजना तथा सांख्यिकी मंत्री श्री० मथुरा दास माथुर नें राजस्थान में विभिन्न प्रकार के कृषि सम्बंधी आंकड़े एकत्रित करने के लिये जो कार्य किया जा रहा है उसकी चर्चा की। योजना आयोग भारत सरकार के सदस्य प्रोफ़ेसर वी० के० आर० वी० राओ ने सम्मेलन में "कृषि उत्पादन का आयोजन" पर एक प्रावैधिक अभिभाषण किया। उन्होंने कृषि सम्बंधी योजना में मानव तत्वों का स्थान तथा उन की विफल होने की संभावनाओं पर विस्तार पूर्वक विवेचन किया। सम्मेलन में दो परिसंवाद आयोजित किये गये थे। (१) प्रतिदर्शी सर्वेक्षणों में गृह को इकाई मान कर चलने की विधि, (२) कृषि उत्पादिता का माप। पहले परिसंवाद के प्रधान थे एफ०ए०ओ०, रोम के सांख्यिकीय विभाग के निर्देशक डा० पी० वी० सुखात्मे तथा दूसरे परिसंवाद के प्रधान थे राजस्थान के योजना तथा सांख्यिकी मंत्री श्री० मथुरा दास माथुर। मैक्सिको के उद्योग तथा वाणिज्य मंत्रालय में प्रतिदर्शी की मुख्य निर्देशिका कुमारी अनमारिया फलोरेंस ने "मैक्सिकों में विकास योजना में प्रतिदर्शी सर्वेक्षणों का स्थान" विषय पर एक सर्वप्रिय व्याख्यान दिया। अंशदायी लेखों के पढ़ने के लिये दो बैठकें डा० जी० आर० सेठ तथा डा० बी० डी० टिक्कीवाल की अध्यक्षता में हुईं। इन दोनों बैठकों में कुल मिलाकर ३० प्रावैधिक लेख प्रस्तुत किये गये थे।

संसद का सम्मेलन जयपुर में बुलाये जाने के लिये जो अति उत्तम प्रबन्ध किया गया उस के लिये संसद के सामान्य दल ने राजस्थान सरकार के प्रति कृतज्ञता तथा धन्यवाद प्रकट किया।

१९६३–६४ के लिये संसद के लेखे का जाँच किया हुआ विवरण आपके सन्मुख प्रस्तुत है। सदैव की भांति जाँच एक व्यवसायिक जाँच करने वाले द्वारा की गयी है।

संसद के वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने वाले सदस्यों तथा प्रतिनिधियों को रेल अधिकारी रियायत देने के लिये सहमत हो गये। इस के लिये संसद रेल अधिकारियों के प्रति आभार प्रकट करती है।

गत वर्ष में संसद का कार्य इसकी कार्यकारिणी परिषद के सभी सदस्यों की सहायता तथा हमारे कार्यकारिणी के प्रधान डा० एम० एस० रन्धावा, आई०सी०एस०, द्वारा दिये गये नेतृत्व तथा उत्साह के कारण सम्भव हुआ। भारत तथा विदेशों से बहुत से व्यक्तियों ने पत्रिका में प्रकाशित करने के लिये प्राप्त लेखों का निर्णय करने में संसद की सहायता की। उन सब के प्रति आभार प्रकट करने में संसद को बड़ी प्रसन्नता है। पत्रिका का हिन्दी परिशिष्ट तैय्यार करने में सहायता देने के लिये श्री० बी० बी० पी० एस० गोयल को भी संसद धन्यवाद देती है। संसद के कार्य में रुचि लेने के लिये मुझे संसद के कर्मचारी गण को भी धन्यवाद देना है।

३० जून १९६४ को समाप्त होने वाले

व्यय	रू०	पै०	रू०	पै०
वेतनार्थ व्यय	२,०३५	००		
कम : ७५% का पत्रिका लेखा में स्थानान्त्रण	१,५२६	२५	५०८	७५
अन्य व्यय द्वारा :				
डाक व्यय, डाक बक्स नवीकरण तथा दूरभाषी यन्त्र व्यय	७५८	४८		
मुद्रण व्यय तथा लेखन सामग्री	२३३	६३		
बैंक व्यय	२५	४८		
रेल भाडा	११४	८०		
परिवहन व्यय	९२	८९		
विविध व्यय	५९	६५		
साईकल मुरम्मत व्यय	२०	१२		
लेखा निरीक्षण शुल्क	२००	००		
मनोरंजन व्यय	१९	६२		
साईकल की बिक्री से हानि	५८	००		
पुस्तक जिल्दसाज़ी व्यय	२३८	००		
	१,८२०	२०		
कम : ७५% का पत्रिका लेखा में स्थानान्त्रण	१,३६५	१५	४५५	०५
सदस्यता शुल्क खारिज किया गया			१०८	००
वार्षिक संबंधन शुल्क			१११	०५
यात्रा व्यय			३१४	९५
वार्षिक बैठक व्यय			३००	००
मूल्य ह्रास द्वारा:				
फरनीचर पर १० प्रतिशत की दर से	४०	००		
साईकल पर ३ मास के लिये १५% की दर से	५	००	४५	००
व्यय के अतिरिक्त आय से सामान्य आरक्षण में			४,३४६	६६
योग			६१८९	४६

६४, रीगल बिल्डिंग, नई दिल्ली,
दिनांक १६–१–१९६५.

सांख्यिकी संसद, पूसा, नई दिल्ली

वर्ष का आय तथा व्यय लेखा

आय	रू०	पै०
स्थायी सदस्यता वृत्तियां	१,३६१	८३
साधारण सदस्यता वृत्तियां	२,६७३	००
अनुदान द्वारा	१,३००	००
सावधि निक्षेप पर व्याज	२१८	००
विनिमय फलस्वरूप विविध आय	१४	६९
कटोती द्वारा प्राप्ति	१३	४४
दान प्राप्त हुआ	२३२	५०
स्वागत समिति द्वारा व्यय हेतु एकत्रित चन्दा	३७६	००
योग	६,१८९	४६

हमारे दिनांक १६–१–१९६५ के प्रति
वेदनाधीन,
ह० सी० एस० भटनागर,
शासपत्रित लेखापाल.

भारतीय कृषि

३० जून १९६४ को समाप्त होने वाले

व्यय	रू० पै०	रू० पै०
प्रारम्भिक माल		२,५२७ ००
खण्ड १५ का छपाई व्यय		५,०९१ ७३
कर्मचारी वर्ग का वेतन (समनुपातीय)	१,५२६ २५	
अन्य व्यय (समनुपातीय)	१,३६५ १५	
		२,८९१ ४०
योग		१०,५१० १३

६४, रीगल बिल्डिग, नई दिल्ली,
दिनांक १६–१–१९६५.

भारतीय कृषि

मुद्रण राशी

३० जून १९६४ को समाप्त होने वाले

व्यय	रू० पै०	रू० पै०
प्रारम्भिक माल १६३ प्रतियां		२,३१० १८
डाक व्यय	४४ २०	
भाडा तथा परिवहन व्यय	१ २५	
विविध व्यय	...	
बैंक व्यय	१ ४०	
लेखा निरीक्षण शुल्क	७५ ००	
		१२१ ८५
व्यय के अतिरिक्त आय		३९४ २२
योग		२,८२६ २५

६४, रीगल बिल्डिग, नई दिल्ली,
दिनांक १६–१–१९६५.

सांख्यिकी संसद, पूसा, नई दिल्ली

वर्ष का आय तथा व्यय (पत्रिका लेखा)

आय	रू०	पै०	रू०	पै०
पत्रिका हेतु चन्दा प्राप्त			३,३९७	७५
अनुदान द्वारा प्राप्त :				
भारतीय राष्ट्रीय वैज्ञानशाला, नई दिल्ली	१,०००	००		
कृषि निर्देशक, पूना	१,५००	००		
यू० पी० सरकार	१,०००	००		
			३,५००	००
शेष माल				
खण्ड १४ तक (नाम मात्र मूल्य)	१	००		
खण्ड १५ (लागत मूल्य) १६६ प्रतियां	१,५८८	०८		
			१,५८९	०८
वर्तमान वर्ष में घटती जिसका स्थानान्त्रण तुलन पत्र में किया गया			२,०२३	३०
योग			१०,५१०	१३

हमारे दिनांक १६–१–१९६५ के प्रतिवेदन आधीन,
ह० सी० एस० भटनागर,
शासपत्रित लेखापाल.

सांख्यिकी संसद, पूसा, नई दिल्ली

लेखा

वर्ष के लिये आय तथा व्यय लेखा

आय	रू०	पै०	रू०	पै०
पुस्तकों की बिक्री द्वारा :				
(१) रोकडा बिक्री	१,३८१	६०		
(२) उधार बिक्री	२२६	००		
			१,६०७	६०
शेष माल (लागत मूल्य) (८६ प्रतियां)			१,२१८	६५
योग			२,८२६	२५

हमारे दिनांक १६-१-१९६५ के प्रतिवेदन आधीन,
ह० सी० एस० भटनागर,
शासपत्रित लेखापाल.